वाद संवाद

आई. एस. एस. एन.
2348 – 8662

शोध विषयक अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक
PEER-REVIEWED JOURNAL

अंक-17
जनवरी-मार्च, 2018
IMPACT FACTOR 7.5

स्वाक्षर

नई दिल्ली (भारत)

अंक - 17
जनवरी-मार्च, 2018

वाद संवाद

आई एस एस एन : 2348-8662
त्रैमासिक

संरक्षक
प्रोफ़ेसर गोबिन्द प्रसाद
अध्यक्ष
भारतीय भाषा केन्द्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

प्रधान संपादक
डॉ. राम रतन प्रसाद
ए. आर.एस.डी कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रबंध संपादक
डॉ. अनिल कुमार सिंह
पी.जी.डी.ए.वी. (सांध्य) कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संपादक
डॉ. अनिल कुमार
ए. आर.एस.डी कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सहायक सम्पादक
डॉ. अभय कुमार
देशबंधु कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

उप संपादक
डॉ. सुधांशु कुमार
डूटा उपाध्यक्ष
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय
मानव संसाधन विकास मंत्रालय, (उच्चतर शिक्षा विभाग), नई दिल्ली द्वारा चयनित

सम्पादकीय प्रभारी
डॉ. बृजेश कुमार
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

वित्त सहायता
श्रीमति अंजली

संपादक मण्डल
एस. एन. मंडल, स्वास्थ्य प्रशिक्षक, बिहार
डॉ. सुधीर कुमार हेम्ब्रम, विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कुमार कालिदास मेमोरियल महाविद्यालय, पाकुड़, झारखण्ड
डॉ. अमित कुमार, सहायक प्रोफेसर, आर. बी. एस. कॉलेज ऑफ ऐजुकेशन, रिवाड़ी, हरियाणा
डॉ. सीमा शर्मा, सहायक प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग, जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
रामरूप मीणा, सहायक प्रोफ़ेसर, श्यामलाल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
डॉ. अंजली कायस्था, सहायक प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग, दयालसिंह महाविद्यालय (सांध्य), दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
रवि कुमार गौंड़, कार्यकारी अध्यक्ष, पल्लव काव्य मंच, रामपुर, उत्तरप्रदेश
डॉ. रमेश कुमारी, स्वतंत्र लेखन, पूर्व छात्रा, जे. एन. यू., नई दिल्ली
डॉ. संगीता वर्मा, सदस्या, संत कबीर अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली
नागेन्द्र मिश्र, शोधार्थी, संगीत एवं प्रदर्शन कला विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश
प्रियंका मिश्रा, शोधार्थी, संगीत एवं प्रदर्शन कला विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश
राजेश्वर पराशर, शोधार्थी, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
सीमा देवी, शोधार्थी, हिन्दी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, हरियाणा
श्रीमति विजय, स्वतंत्र लेखन, नई दिल्ली

प्रकाशक, मुद्रक एवं वितरक
स्वाक्षर
103, मनोकामना भवन, गली नं-2 कैलाशपुरी
पालम, नई दिल्ली - 110045 भारत
दूरभाष : +09871423939, 9711950086
ई-मेल : vaadsamvaad@gmail.com

इस पत्रिका में व्यक्त लेख एवं विचार लेखकों के व्यक्तिगत हैं तथा आवश्यक नहीं कि यह विचार अनिवार्य रूप से प्रमाणित पत्रिका की नीतियों के द्योतक हों। इसमें संपादक एवं प्रकाशक की सहमति/प्रमाणिकता आवश्यक नहीं है।
समस्त न्याय पत्रिका से संबंधित दिल्ली क्षेत्र में होगा। इस पत्रिका के सभी सदस्य अपनी सहमति से अवैतनिक हैं।

NSL/ ISSN/ INF/ 2014/ 864 /Refered by NSL/ISSN/CERT/2016/133

14. *प्रेमचंद के कथा साहित्य में विधवा समस्या* 67
– डॉ. संगीता वर्मा
15. *दलित स्त्री आत्मकथाओं में स्त्री विमर्श* 73
– मीरा
16. *जयशंकर प्रसाद कृत 'अकाशदीप' कहानी संग्रह में संकलित कहानियों की मूल संवेदना* 79
– डॉ. अनिता कुमारी
17. *वर्तमान सामाजिक परिदृश्य : संस्कृति के सरोकार* 87
– डॉ. इन्दु दत्ता
18. *दलित त्रासदी की कहानियाँ और इक्कीसवीं सदी* 92
– डॉ. राजेश चन्द आदर्श
19. *प्रगतिशील काव्य में धार्मिक चिंतन* 97
– डॉ. देवी प्रसाद
20. *राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के कृषि श्रमिकों के स्वास्थ्य पर कीटनाशकों का प्रभाव (अलवर जिले का क्षेत्रीय अध्ययन)* 102
– डॉ. कन्हैया लाल मीना
21. *राग दरबारी यथार्थ और लोक जीवन की व्यंग्यात्मक गाथा* 110
– डॉ. ममता चावला
22. *संस्कृत साहित्य में प्रकृति चित्रण के विविध आयाम* 116
– श्रीमती मैना

निबंध **120–127**

23. *दलित निबन्ध : विचार* 120
– डॉ. अभय कुमार

कहानी **128–135**

24. *ब्रह्म-पिशाच* 128
– डॉ. विक्रम सिंह

पुस्तक समीक्षा **136–138**

25. *महेश कटारे का यात्रावृत्तांत पासपोर्ट की कहानी (यात्रावृत्तांत)* 136
– डॉ. छोटूराम मीना

कविताएँ **139–137**

– गोबिन्द प्रसाद 139
– राम रतन प्रसाद 142
– शशिधर चौबे 145
– अर्चना कुमारी 146
– शत् शत् नमन् (श्रद्धांजलि) केदारनाथ सिंह 147

NSL/ ISSN/ INF/ 2014/ 864 /Refered by NSL/ISSN/CERT/2016/133

राग दरबारी यथार्थ और लोक जीवन की व्यंग्यात्मक गाथा

– डॉ. ममता चावला

श्रीलाल शुक्ल स्वातंत्र्योत्तर भारतीय सामाजिक जीवन की विडंबना और विसंगति के महत्वपूर्ण साहित्यकार है। जिनके लेखन में स्वतंत्र भारत के जनतंत्र की आलोचनात्मक प्रस्तुति मिलती है। उनकी कहानियों, निबंधों और लेखों में लोकतंत्र की कसौटी पर भारतीय जनतंत्र की असफलताओं, और उन सभी विरोधी घटकों की निर्मम भर्त्सना की गई है जिनकी वजह से लोकतंत्र की स्थिति दयनीय बनी हुई है। उन्होंने अपने लेखन में समाज,राजनीति, शिक्षा, संस्कृति एवं विकास के झूठे और सच्चे पक्षों का उद्घाटन करने का सफल प्रयास किया है। उनका लेखन जीवन की आलोचना करता है उसकी विसंगतियों, मिथ्याचारों, और पाखंडों का पर्दाफाश करता है। अखिलेश जी के मत में "हमारे लोकतंत्र की यात्रा सपनों के विध्वंस की संस्थाओं, मूल्यों, नैतिकताओं, और आस्थाओं के क्षरण की कथा है। श्रीलाल शुक्ल इस क्षरण के उद्घाटनकर्ता रचनाकार हैं। राजनीति की पतनशीलता, विकास का गोरखधंधा जनहित का पाखंड, लोकतंत्र की इन वास्तविकताओं पर तीक्ष्ण और विस्तृत कटाक्ष उनकी रचनाशीलता की धूरी है। गद्य लेखन में भारतीय लोकतंत्र की इतनी सशक्त और विस्तृत विवेचना अत्यंत दुर्लभ है।[1]

स्वतंत्रता के बाद आम जन के विकास के लिए बहुत सी योजनाएं बनाई गई ताकि उनके जीवन को सुधारा जा सके,लेकिन इन पंचवर्षीय योजनाओं, जमींदारी उन्मूलन, भुदान आंदोलन जैसी योजनाओं का लाभ आम जनता को नहीं मिल पाया और उनकी स्थिति यथावत बनी रही। परिस्थितियों ऐसी बदली कि राष्ट्रीय चेतना एवं सामाजिक उत्तरदायित्व का स्थान समाज में अवसरवादिता ने ले लिया। समाज में फैली अराजकता, उत्पीड़ित जनजीवन को श्री लाल जैसे साहित्यकारों ने अपनी विभिन्न रचनाओं में वाणी दी है।स्वतंत्रता के बाद के समाज को समझने के लिए श्रीलाल शुक्ल का महत्व असंदिग्ध है।

श्री लाल शुक्ल जी मानवतावादी साहित्यकार हैं। उनका, अपनी मातृभूमि के प्रति प्रेम उनको एक जागरूक और संवेदनशील उपन्यासकार के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत करता है। उनकी रचनाधर्मिता में मानवीय जिजीविषा की गूंज सर्वत्र सुनाई देती है। उन्होंने अपनी रचनाओं में तत्कालीन समाज व राजनीति की पतनशीलता को अभिव्यक्त करके,समाज की उल्टी चाल, की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया है। उन्होंने स्वयं अपने आप को 'राहों का अन्वेषी' माना है, जो भटक नहीं रहा है अपितु नए रास्ते की खोज कर रहा है।[2]

उनकी साहित्यिक रचनाओं में हमें, उनके चरित्र की यही छाप मिलती है। श्रीलाल शुक्ल का

• सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, माता सुन्दरी महिला महाविद्यालय, दिल्ली